तोरा अंगनामे

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

TORA ANGNA ME

(Maithili Geet)

By

Jagdish Chandra Thakur 'Anil'

पहिल संस्करण

नवम्बर १९७८

मूल्य : तीन टाका मात्र

प्रकाशक:

डॉ.हेम चन्द्र लाल कर्ण

चतरा (मधुबनी)

मुद्रक:

मुरलीधर प्रेस

पटना-८०००६

गीति काव्य आ 'अनिल'जी

आधुनिक युगमे गीत शब्दकें ल'बड़ भ्रम पसरल अछि|'गीति' ओ 'गीत'कें लोक एके अर्थमे लैत अछि| हमरा जनैत 'गीति'त अंगी थिक ओ गीत ओकर अंग| तात्पर्य ई जे 'गीति-काव्य'क एक भेद मात्र थिक 'गीत'| 'गीति' अंग्रेजीक 'लिरिक' शब्दकें द्योतित करैत अछि आ 'गीत' अंग्रेजी शब्द 'सौंग'कें| दोसर भ्रम अछि सब कविताकें 'गीति' मानि लेब|

गीति,काव्यक सर्वाधिक सुकोमल, आनंददायक ओ प्रिय स्वरुप थिक|व्यक्तिक आवेगपूर्ण भावनाक अत्यंत स्वाभाविक ओ सरल अभिव्यक्ति होइत छैक गीतिमे |स्वानुभूति-निरुपिनी होइत अछि गीति-काव्य,तें ई आवेगपूर्ण भावना व्यक्तिगतो भ' सकैछ,धार्मिको, देशभक्तिपूर्ण अथवा आनो प्रकारक | यैह सभ कारण अछि जे गीति-काव्यक रचना लेल भाव-गाम्भीर्य ओ तन्मयताक बेसी प्रयोजन होइत अछि | महत्वपूर्ण भावनाक प्रभावकारी अभिव्यक्ति आवश्यक छैक |भावानुकूल भाषा त चाहबे करी |आ, भाषाक श्रीवृद्धि करैत अछि शब्द | तें गंभीर भावनाक अभिव्यक्ति लेल जाहि भाषाक प्रयोग हो तकर शब्दो उपयुक्त स्थान पर श्रेष्ठ होयबाक चाही |संक्षेपमे ई कहल जा

सकैत अछि जे कवि जखन भावावेशमय आत्मानुभूतिकें संतुलित शब्दक माध्यमसं संगीतमय चित्रण करैत छथि तखन गीति-काव्य बनैत अछि |आ,अभिव्यक्तिक लघुता,मानवीय भावनाक अलंकृत व्यंजना एवं गतिशीलता गीति-काव्यक विशेषता होइत अछि |

गीतिक विकास लौकिक जीवनक अनुभूतिक आधारेपर भेल होयत,ई हमरा लोकनिकें मानि लेबाक चाही |पावनि-तिहार ओ अन्य धार्मिक कृत्य कविक प्रेरणा-श्रोत रहल होयत | तैं लोक-गीतसं गीतिकाव्यक विकास भेल होयत | प्राचीन भारतीय भाषामे बहुतो गीत भेटैत अछि |नाट्य-शाश्त्रक प्रणेता भरत मुनि सेहो गीतक महताकें स्वीकार कयने छथि |

मैथिली गीति-काव्यक आरम्भ 'चर्यापद'सं मानल जाइत अछि |बादमे जयदेव, चंडीदास, विद्यापति आदि एही पद-शैलीकें अपनौलनि |तत्कालीन समाजपर एहि शैलीक खूब प्रभाव पडल | विद्यापतिक परवर्ती कवि लोकनि त गीति-काव्यक अमार लगा देलनि |

उन्नैसम शताब्दीक अंतिम चरण अबैत-अबैत विद्यापतिक परंपरासं भिन्न

गीति-काव्यक रचना होयब आरम्भ भेल |ओहिमे शिल्प,विषय, भाव ओ शैली -सभ दृष्टिसं परिवर्तन लक्षित होइत अछि |समयक बदलैत गति,नव परिवेश कथ्यमे सेहो परिवर्तन अनलक | स्वतन्त्रता प्राप्तिक बादसं एक दिस मैथिलीक गीति-काव्यमे नवीनतम प्रवृति विशेष रूपसँ परिलक्षित होइत अछि, त दोसर दिस राजनीतिक गीति-काव्यक रचना होयब आरम्भ भेल |ओहिमे शिल्प,विषय, भाव ओ शैली -सभ दृष्टिसं परिवर्तन लक्षित होइत अछि |समयक बदलैत गति,नव परिवेश कथ्यमे सेहो परिवर्तन अनलक | स्वतन्त्रता प्राप्तिक बादसं एक दिस मैथिलीक गीति-काव्यमे नवीनतम प्रवृति विशेष रूपसँ परिलक्षित होइत अछि, त दोसर दिस राजनीतिक स्वतन्त्रताक संग-संग राजनीतिक कुटिलता,आर्थिक विषमता ओ संकटमय जीवनक निराशा, असंतोष, कुंठा आदि क्रमशः गीतिमे महत्वपूर्ण रूपसँ प्रस्फुटित होइत अछि |

मैथिली साहित्यमे विद्यापतिसं चल अबैत ई गीति-काव्य-धारा आइयो धरि अबाध गतिसं प्रवाहमान अछि |गतिमे, गंभीरतामे अथवा व्यापकतामे ई धारा भारतीय वांग्मयक कोनो साहित्यसं पछुआयल नहि अछि |

तोरा अंगनामे गीति-काव्यक एक उत्कृष्ट संग्रह अछि जाहिमे 'अनिल'जी गीति-काव्यक मूल तत्व- वैयक्तिकता, संक्षिप्तता,भाव-एकता,संगीतात्मकता ओ सशक्त अभिव्यंजना-कौशलक सम्यक परिपाक कयलनि अछि | 'माँ शारदे' आ 'जय माँ संतोषी'मे कविक स्वानुभूति स्पष्ट रूपसँ देखबामे अबैत अछि | 'अइ माइटकें प्रणाम' आदि किछु एहनो रचना अछि जाहिमे कवि

आत्मानुभूतिकें व्यक्त नहि क' सकलाह अछि, तथापि एहिमे कविक भावोन्माद एतेक तीब्र भ' उठल अछि जे व्यक्तित्वक स्पष्ट अभावोमे कविक मर्म प्रकट भ' जाइत छनि |

गीति कोनो विशिष्ट मनोदशाक उच्छलन भेल करैत अछि |ओ जीवनक ओहि महत्वपूर्ण क्षणक रचना होइत अछि जखन कोनो तीब्र आवेशसं कविक चेतना अंतर्मुखी भ'उठैत छैक |आ, अंतर्मुखी चेतना बहुत क्षणिक होइत छैक |यैह क्षणिक चेतना थिक 'संक्षिप्तता'|'तोरा अंगनामे'क प्रत्येक रचनाक अनुशीलनसं ई ज्ञात होइत अछि जे 'अनिल'जी सर्वत्र छोट-छोट पदमे भावक गुम्फन कयने छथि | 'देखि तोरा लगैए', 'अहाँ नीलगगन केर चन्दा', 'मोन होइए' आदि पद भाव-गुम्फित अछि, संगहि छोटो |

गीति काव्यक तेसर आवश्यक तत्व अछि भाव-एकता | गीति काव्यक लेल ई आवश्यक छैक जे आदिसं ल'क' अंतधरि ओ एके भावसं अनुस्यूत हो | ओहि रचनाक विभिन्न पंक्ति मूलतः एके भावसं सम्बद्ध रहबाक चाही |अनिलजीक प्रत्येक रचनामे सर्वत्र एके भाव अथवा जीवनक कोनो एके भावनात्मक स्थितिक अंकन कयल गेल अछि |'आधा अंगक मालिक छी अहीं', 'ई जुनि पूछू' आ 'से फगुआ खेलायत कोना क' भाव-एकताक सशक्त उदाहरण थिक |

संगीतात्मकता गीति-काव्यक चारिम ओ अति महत्वपूर्ण उपादान थिक |

एहि संकलनक सब गीत संगीतात्मक अछि -लय, तालमे आबद्ध | ई गीत सब बहुत कम समयमे मिथिलांचलक जनकंठमे बसि गेल अछि |लोककंठमे लोक-गीतक रूप ल' लेलक अछि |गेयत्वक दृष्टिसं एहि संकलनक सब गीत अति सफल अछि | मात्र सांगीतिकता अछि से बात नहि, ओहिमे अनुभूतिक सुन्दर सामंजस्यो छैक |अनुभूतिक तीव्रता कविताकें स्वयमेव संगीतात्मक बना दैत छैक |

'तोरा अंगनामे' गीति-काव्यक प्रणयनसं अनिलजी सामाजिक,आर्थिक ओ राजनीतिक स्थितिक प्रतिबिम्बन जाहि यथार्थ अनुभवक संग कयलनि अछि, से प्रशंसनीय | हमरा आशा अछि, सुधी समाजमे 'तोरा अंगनामे' समुचित आदर पाओत |

पटना ---------छत्रानंद

२२-११-१९७८

‘तोरा अंगनामे’---हम

हमर बहुत रास गीत-रचना हमर मित्र श्री शशिकांतजी,सुधाकांतजी आकाशवाणी आ चेतना समिति आ मैथिली साहित्यक विभिन्न मंचसं अपने सभकें सुनबैत आबि रहल छथि | अपन किछु रचना अपनेकें सुनयबाक किंचित अवसर हमरहु आकाशवाणीसं आ किछु साहित्यिक मंचसं भेटल अछि |अपने सभ हमर रचनाकें पसिन्न कय हमरा प्रोत्साहित केलहुं अछि,हमरा लेल एहिसं बेशी प्रसन्नताक बात आर की भ’ सकैछ ? आ तकर प्रमाण थिक यैह जे ‘तोरा अंगनामे’ अपनेक हाथमे अछि |

सर्व श्री बी.के.चौधरी (स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, लोकल हेड ऑफिस,पटना)

सं जे प्रोत्साहन, प्रसिद्ध आधुनिक कवि भाइ भीमनाथजीसं जे सहयोग, सबहक प्रिय बटुक भाइ माने मैथिली साहित्यक व्यंग्य कथाकार श्री छात्रानंदजीसं जे स्नेह आ हास्यसम्राट श्री हरिमोहन बाबूसं जे

आशीर्वाद भेटल अछि तकरा शब्दें व्यक्त करबाक सामर्थ्य हमरामे नै अछि |

हमर टटका मित्र डॉ.हेम चन्द्र लाल कर्ण (चतरा,मधुबनी) आ श्री कृष्ण चन्द्र झा (डुमरा,मधुबनी) पोथी प्रकाशनक लेल जिद्द ठानि देलनि आ मुरलीधर प्रेसक व्यवस्थापक श्री देवेन्द्र झा जी एतेक कम समयमे एतेक तत्परता देखाय मुद्रण करौलनि | हिनका लोकनिकें कोन

शब्दें धन्यवाद दियनु ?

साहित्य-सृजनक लेल पूज्यवर बाबूजी आ मामाजी (श्री देवेन्द्र कुमर,हाई स्कूल, रहिका, मधुबनी) सं जे प्रोत्साहन आ सुझाव भेटैत रहल अछि हम तदर्थ नतमस्तक छी |

अपन सहकर्मी श्री बद्री प्रसाद शर्मा (मुजफ्फरपुर) आ श्री कन्हैयालाल श्रीवास्तवकें कोना बिसरि सकबनि जे सतत साहित्यिक-वातावरण बनाक'

रखबामे सहयोग दैत रहलाह अछि |

आब अहीं कहू जे एहन स्थितिमे हम अपना विषयमे किछु लिखिक' अपनेक बहुमूल्य समय किएक जियान करू? ई त अपने कहि सकैत छी, सोचि सकैत छी आ सूचित क' सकैत छी जे 'तोरा अंगनामे' की अछि ? कोना अछि? किएक अछि ?

हम त एतबे कहब जे -----

ने कवि छी हम ने गीतकार

ने आलोचक ने लेखक छी

मानी त मानू अपनहि सन

माँ मैथिलीक पद-सेवक छी |

जय मैथिली !   जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

तिथि २३ नवम्बर १९७८

माँ शारदे !

माँ शारदे

वर यैह दे

हम मंगइत छी तोरासं|

भारतमे

जनम-जनम जनमी

मिथिला माइक कोरासं| माँ शारदे.........

अपन ज्ञान केर मधुर वारि

हम धरती पर बरिसाबी

पाथरहुमे भरि दी ह्रदय आर

मृतकोकें बिहुसि जियादी,

हियमे ओ सुधा भरि दे | माँ शारदे .....

अनुपम अपन संस्कृतिकें

हम दुनियामे फैलाबी

ह्रदयहीनता,द्वेष,कलहकें

दुनियासं बैलाबी,

कानमे ओ मंत्र कहि दे | माँ शारदे ....

सौंसे दुनियामे सबकें

हम त्यागक मन्त्र सिखाबी

आंगन-आंगन घर-घर बुलिकय

प्रेमक दीप जराबी,

ओ ज्योति-कलश भरि दे | माँ शारदे......

दुनिया एके स्वरसं गाबय

हिलि-मिलि विजयक गीत

गृह-उपग्रह,नक्षत्र आदि पर

होइ मानवक जीत,

सीढ़ी ओ सबल गढ़ि दे | माँ शारदे.......

जय माँ संतोषी

गहबर जे गेलौं

दुरगाथान जे गेलौं

कालीसं जे मंगलौं

मैया दुरगासं मंगलौं

दीय’ मैया एको संतान हे

सुगना रे सुगना, रे सुगना |

थिर ने रहै छल दगधल छाती

केलहु कतेको कबूला-पाती

विभूत दियेलौं गोहारि करेलौं

ब्राह्मण खुएलौं कुमारि खुएलौं
धुमन चढ़ेलौं दीप जे जरेलौं
आँचर पसारि कोखिक भीख जे मंगलौं
तइयो ने भेल कल्याण रे
सुगना रे सुगना, रे सुगना |
तोरा बिना अंगना अन्हार लगै छल
सगरो जिनगी पहाड़ लगै छल
छठी पावनि पुजलौं चौठचन्द्र पुजलौं
दिनकरसं जे मंगलौं चौठी-चानसं मंगलौं
केरा घौड चढ़ेलौं खीर-पूरी जे चढ़ेलौं
कोशिया कबुललौं ढकन कबुललौं
हमरा ले' सभ बनला अकान रे
सुगना रे सुगना, रे सुगना |
गेलौं शिवशंकरक शरणमे
लपटयलौं जा हुनके चरणमे
कुसेसर जे गेलौं बिदेस्सर जे गेलौं
कपलेसर जे गेलौं भवानीपुर गेलौं
गौरी लग कनलौं महादेव लग कनलौं
फूल-बेलपात आ गंगाजल चढ़ेलौं
कियो नहि देलनि धियांन रे
सुगना रे सुगना, रे सुगना |

कमलो नहेने किछु नै भेल

सिमरियो डूब देने कष्ट ने गेल

सभतरिसं थकलौं त घर आबि बैसलौं

मोन मारि शुक्रक उपास तखन ठनलौं

धूप जे जरेलौं दीप जे सजेलौं

खीर जे चढ़ेलौं गुड-पूरी जे चढ़ेलौं

अठमा दिनपर मइया संतोषीजीकें पुजलौं

पुजितहि- पुजितहि दस मास पुजलौं

त फेरि देलनि मइया धियान रे

सुगना रे सुगना, रे सुगना |

कह जय माँ संतोषी

जय जय माँ संतोषी |--------

जुनि कान रे

जुनि कान जुनि कान जुनि कान रे

बौआ जुनि कान रे,

ने त कौआ ल' जेतौ तोहर कान रे |

खा ले जल्दी, सूति रह चुप-चाप

नहि त भकौआँ धरतौ

सुनहिन हे जंगलमे गीदड़ बजै छै
टांग पकड़ी ल' जेतौ
एतौ लकडसुंघा धोकड़ीमे कसिक'
नेने चल जेतौ अपन गाम रे |.........
काल्हि अबैछै बौआके बाबू
नेने कते बस्तुनमा
हमरा बौआले' अंगा-टोपी
रंग-विरंगक खेलौना
साइकिलके घंटी बौआ टुनटुन बजेतै
देखि जुडायत हमर प्राण रे |.......

बुचिया रधिया बड बदमास'छि
बौआ हमर बुधियार
भोरे बौआक बाबाकें कहि क'
मंगबा देबै कुसियार
कल्हि खन नानीक गामसं अबैछै
चंगेरा भरल पूरी-पकवान रे |...........
भोरे बौआले' भानस करबइ
भात-दालि-तरकारी
बुचियाकें कनियों नै देबै
बौआकें भरि थारी

दुःख केर ई राति बौआ बीतत अबस्से

असरा गरीबक भगवान रे |.......

ऐ माटिकें प्रणाम

बौआ दूनू हाथ जोडि करू

ऐ माटिकें प्रणाम

ई देष थिक गांधीक

विद्यापति केर गाम । बौआ ....

.

सोनाक चिडै भारत

से दुनिया जनैए

आ तकर हृदय मिथिला

से के नै बुझैए

हम की कहब इतिहासे कहैत अछि

आएल छथि षंकर,लोभाएल छथि राम । बैाआ........

काल्हिकेर मिथिलाक

मण्डन अहीं

यौ वाचस्पति अहीं

यौ विद्यापति अहीं

आ काल्हि केर भारतक

गांधी अहीं

यौ सुभाशो अहीं

यौ भगतसिंह अहीं

विष्वमे चमका सकी अपन पूर्वजक
आषा करैए ई धरती ललाम । बौआ........

पेट अपन कहुना त
कुकुरो भरैए
छिः–छिः ओ जीवन
जे अजगर जिबैए
मानव–समाज लेल
दम जे तोडैत अछि
सैह दुनियांमे
अमर भ'जिबैए

थूकि दैछ दुनियां ओइ स्वार्थीक नामपर
माटिकेर नाम जे करैछ बदलाम । बौआ.......

पडल अछि अहींक लेल
काज एकटा
बनयबाले' भारतमे
समाज एकटा

काल्हि केर भारतमे चाही ई घोशणा–
'ई धरती हो तकरे चुआबय जे घाम '। बौआ.........

देखि तोरा लगैए

देखि तोरा लगैए तहिना जेना
चान नभसं भूतलपर उतरि आएल हो ।
दिनेमे हो पसरल ष्यामल घटा
जैमे आभा तरेगनक छिडियैल हो ।

दए रहल अछि मूक निमन्त्रण जेना
लाजसं सकपकायलि पियासलि नयन,

बुझि पडैए जेना स्नेह केर बाढिमे
कपोलक दू सरोबर उमडि आएल हो ।

मधु बोरल अधर अछि छिडिया रहल
दाडिम केर दाना सनक तोर दसन,
बुझि पडैए जेना साओन मासमे
कतौ अम्बरमे बिजुरी छिटकि आएल हो ।

पुलकित भ'उठैये एतय सभ डगर
तोर सांसक चलय मलयानिल जतय,
बुझि पडैए जेना चन्दन–बनसं
कस्तूरीवला मृग भटकि आएल हो ।

अहां नील गगन केर चन्दा

युगल गीत

–––– अहां नील गगनकेर चन्दा
हम मृत्यु भुवनक चकोर ।

–––– हम विरहक राति अन्हरिया
पिया अहां वसन्तक भोर ।

ई जादूगर
कतयसं आयल
नयन लोभायल
निन्न बिलायल
मोनक चैन पडायल,सखि हे.....
––––––दुनियां जकरा चोर कहय से
अनका कहइछ चोर ।अहां........
– –––––की छल राजा

की छलि रानी

की छल सोना

की छल चानी

सभटा एक पिहानी,सखि हे.....

––––––दुख–सुख जीवनमे अबिते अछि

जहिना सांझ आ भोर ।अहां ......

––––––प्रीति डगर हम

छोडब कोना क’

छी मांछ, पानि बिनु

जियब कोना क’

जिबितहि मरब कोना क’,सखि हे......

हृदय–सिंधुमे रहि–रहि उठइछ

अहींक सुधिक हिलकोर ।अहां......

––––––मिलनक आषा–सुमन

फुलायल

हृदय सिनेहक

घाट नहायल

अपुरुव प्रीति समायल,सखि हे

––––––हो...अपुरुव प्रीति समायल

––––––मन उपवनमे नाचि रहल छी

जहिना नाचय मोर । अहां.......

ससुर –अंगनामे

घुमा दियनु हे ससुर –अंगनामे ।

नहूं–नहूं चलियौ दुल्हा

जोरसं ने चलियौ

एखनेसं कनियांके

हाथ ने छोडियौ
धरा दियनु हे ससुर अंगनामे ।
देखब दुलहा कहियो
हुए’ ने गलती
अपने चलबै आगां
कनियां पाछां–पाछां चलती
सिखा दियनु हे ससुर अंगनामे ।
पोथीमे ने भेटत दुल्हा
एहेन गियान
जिनगी भरिमे संगी एहेन
भेटत क्यो ने आन
लिखा दियनु हे ससुर अंगनामे ।
देखब दुलहा कहियो
ई संगी नहि छूटय
सासुरक बान्हल प्रेमक
डोरी ने ई टूटय
बन्हा दियनु हे ससुर अंगनामे ।
देलहुं अमोल धन
राखब जोगाकए
बड पछतायब
एकरा गमाकए
बुझा दियनु हे ससुर अंगनामे ।
वर–कनियां होइए
एके गाडीक` दू पहिया
हैत बड कचोट
बिसरबै ई जहिया
रटा दियनु हे ससुर अंगनामे ।

मोन होइए

मोन होइए अहांकें देखिते रही
किछु बाजी अहां हम सुनिते रही ।

आइ आयल मिलन केर
मधुर-यामिनी
बनि बैसलौं अहां
मानिनी-कामिनी
एक युग सन लगैए एक-एक घडी
किछु बाजी अहां हम सुनिते रही ।

आइ आयल हृदयमे
आनन्दक लहरि
बात कहबाक जे छल

से गेलौं बिसरि

किछु फुरा ने रहल की करी ने करी
किछु बाजी अहां हम सुनिते रही ।

कोन जादू छी भरने
अपन दृष्टिमे
जे नहा गेलौं हम
स्नेह केर वृष्टिमे

आब मरजी अहीं केर अहीं जे करी
किछु बाजी अहां हम सुनिते रही ।

बाजू ओझाजी रामो–राम
जेल बना नित खेल करै छी
भेटत कोना सम्मान ?
बाजू ओझाजी रामो–राम ।

मात्र ससुरेक भरोसे अहांकें
जनमौलनि की बाप यौ
अपना घरमे पावनि–तिहारे
सुनै छी भेटय भात यौ
अइठां तुलसीफुलकें खुद्दी कहै छी

तरुआकें कुकुरक कान,

बाजू ओझाजी रामो–राम ।

लाजो ने होइए मुंह बजै छी

हमरा 'इ–ओ' चाही

अछि बिकायल देहो अहांकेर

बापो छथिए गबाही

कतेक बेर छी घूरल सभासं

तैपर एत्ते गुमान?

बाजू ओझाजी रामो–राम ।

मिथिला केर युवक की जानय

जोडब नेह–सिनेह

पाइक लोभें आंखि मूनि जे

बेचि लैत अछि देह

अबइछ बनि रावणे ससुर–गृह

कहतै कोना लोक राम ?

बाजू ओझाजी रामो–राम ।.......

लाज जं हो त ठोर लिय'सीबि

कान खोलि क' सूनू यौ

एक दोसरक अछि परिपूरक

नर आ नारी दूनू यौ

सरिपहुं श्रृंगार छथि पुरुश नारी केर

नारीसं सृश्टिक विधान ।

बाजू ओझाजी रामो–राम ।.......

कक्का मारल गेला

कक्का मारल गेला
सौराठक मैदानमे
पहिले कन्यादानमे ।

भरना रखलनि खेत–पथार
टाका गनलनि दस हजार
तैपर दू सोडहि बरियाती
एला बनि–बनि घोडा–हाथी

महिसो बेच'पडलनि रसगुल्लाके दाममे
बरियातीक सम्मानमे ।

भेलखिन 'अप–टू–डेट' जमाइ
समधि से नमरी कसाइ
कोनो ठां हुए ने हिनाइ
संठलनि खेतो बेचि बिदाइ

तइयो रुसिए गेलथिन समधिन समधियानमे
कोजगराक मखानमे ।

तैपर दाही से घमसान
ने हेतनि एको चुटकी धान
छटपट–छटपट करनि परान

कथीपर जीतै सभ सन्तान

की करता ?माथ हाथ धए बैसल छथि खरिहानमे
जडाउरक ओरिआनमे ।

समधियो पौलनि जतबा टाका
भेलनि रमन–चमनमे खरचा
नफ्फा बस एतबेटा भेलनि
समधिक घर उजाडिक' छोडलनि

सभटा टाका चलि गेल बनियांके दोकानमे
पूरी आ पकवानमे ।

छथि त सबहक घरमे बेटी
सभक्यो मिलि एखनो जं चेती
तखने मिथिला फेर चमकती
तखने मैथिलीयो हंसि सकती

अत्यावष्यक अछि परिवर्तन तिलक विधानमे
सौराठक मैदानमे ।

तिलक प्रथाकें बन्द करू

हे मिथिलाके भाग्य–विधाता,नारा आइ बुलन्द करू
चाही जं उद्धार मैथिलीक, तिलक प्रथाकें बन्द करू ।

छथि उदासे बहिन मैथिली
आइ जागृतिक भोरमे
स्नेह ने पाबि रहलि बेचारी
अपनो माइक कोरमे
देखि मलिन आकृति निज जनकक
डूबल सदिखन नोरमे

हो पौरुश तं एहि फन्दासं मिथिलाकें स्वच्छन्द करू
चाही जं उद्धार मैथिलीक, तिलक प्रथाकें बन्द करू ।

परिणयमे काटर केर परिचय
थीक परम व्यभिचार
अन्त होइछ की एहि व्यभिचारक
अछि जनइत संसार
दरकि रहल अछि छाती जननिक
देखि ई अत्याचार

प्रायष्चित करए समाज एहि पापक,
सभक्यो तकर प्रबन्ध करू
चाही जं उद्धार मैथिलीक, तिलक प्रथाकें बन्द करू ।

भाशण आ आष्वासन दै छथि
बडका–बडका नेता,

विष्व–समाजक अभिनेता आ
नवयुग केर प्रणेता
फेकत थूक बहिन हुनकापर
जे नहि डेग बढेता
करू दूर ई रोग समाजक, आब ने अधिक विलम्ब करू
चाही जं उद्धार मैथिलीक, तिलक –प्रथाकें बन्द करू ।
खेद जे हम मैथिल एखनो धरि
अपने घरमे हेरायल छी
कारण जे हम सभ एखनो धरि
बाट अपन भोतिआयल छी
तें ने अपने गारल कलमे
हम दिन–राति पेरायल छी
विशम समस्या अपन समाजक,
सभक्यो मिलिकय अन्त करू
चाही जं उद्धार मैथिलीक, तिलक प्रथाकें बन्द करू ।

चलि जो रे पांती

चलि जो रे पांती साजनके गाम
कहियन्हु हुनका हम्मर प्रणाम
मोन पाडि दीहनु सासुरके बाट–घाट
मोन पाडि दीहनु अभगलीक नाम ।.....
पुछिहनु हुनका जे रूसल किएक छथि
हमरा बिसरि चुप्प बैसल किएक छथि
पठौलनि ने मिसरी आ ने खटमिट्ठी
ने देलनि समाद आ ने लिखलनि चिट्ठी

की ने पडैनि मोन रातियो चतुर्थीक

की नै भेटै छनि लिफाफोक दाम ।........

कहलनि अहां चान हम छी चकोरी

टूटत ने कहियो पीरीतिक ई डोरी

मोनमे आषाक गुड्डी उडौलनि

संग–संग कतेक नव सपना सजौलनि

प्रेमक पथपर दौडाय आब किए

पाछां घिचै छथि पकडिक’लगाम ।......

करइछ किलोल आइ आंखिक पिपासा

चूर–चूर भ’ गेल मोनक बताषा

पाथर करेजकें तों पिघलबिहें

मिझा गेल बातीकें फेरसं जरबिहें

कहिहनु बेकल छथि जंगलमे सीता

जल्दीसं चलियौ औ अयोध्याक राम ।.....

ई जुनि बूझू

ई जुनि बूझू झूठ कहै छी ।

कहिया दर्षन हैत अहांसं

आंगुरपर हम दिन गनै छी ।

सासुर अयबाक होइए इच्छा

मुदा चलैए एखन परीक्षा

बीतत कोना ई मिलन–प्रतीक्षा

कखनो–कखनो खूब सोचै छी,

ई जुनि बूझू झूठ कहै छी ।

हैत परीक्षा–फल जं ने बढियां

लोक कहत जे अभागलि कनियां

चुटकी लेत हमरा भरि दुनियां

मोन मारि तें एखन पढै छी,

ई जुनि बूझू झूठ कहै छी ।

जुनि बूझब जे अहांकें बिसरलौं

ककरहु माया–जालमे फंसलौं

हम त अहांकेर हाथ पकडलौं

अहींकेर प्रेम–गगनमे उडै छी,

ई जुनि बूझू झूठ कहै छी ।

बीतत परीक्षा षीघ्रे आयब

तखन अपन हम कुषल सुनायब

अहां कथू ले' ने गाल फुलायब

चिट्ठी एखन बस,एतबे लिखै छी,

ई जुनि बूझू झूठ कहै छी ।

आधा अंगक मालिक छी अहीं

प्राणनाथ केर चरण–कमलमे सादर हमर प्रणाम

हम लीखि रहल छी चिट्ठी ई अहां बूझब टेलीग्राम
पबितहिं चिट्ठी चलि देब अहां कनियों जं हैब गियानी
नहि तं ससरि जैत हाथसं मधुमय हमर जुआनी
आधा अंगक मालिक छी अहीं
तें दै छी इएह इषारा
एहन बयसमे फेर ने कहियो
भेटब हम दोबारा ।एहन बयसमे.....
कतेक साओन आयल आ आबि क' चल गेल
कतेक बादरि आयल आ बरसि क' चल गेल
पियास नयनकेर मिझा ने सकलौं
केलौं कते नेहोरा । एहन बयसमे.......
सपनो नै कहियो दरस भेल आ हम चिहुकि रहि गेलौं
बीति चुकल कएटा वसन्त आ हम कुहुकि रहि गेलौं
कहू कते दिन जीबि सकब हम
रटइत प्रेम–पहाडा । एहन बयसमे ....
तनकेर सागरमे अबइत अछि अहांक सुधिक हिलकोर जखन
विरह–वेदना भंवर बीच डुबि जाइछ आषकेर डोर तखन
जीवन–नैया कोना क' पहुंचत
मांझी बिना किनारा । एहन बयसमे.......

ई जुनि पूछू

ई जुनि पूछू अहां बिना
राति बितैए हमर कोना ....

किछु बात मोन पडि आबय
मोनक पंछी उडि भागय
चैनक चिल्हका उठि कानय
कतबो कहने नहि मानय
लाखो थकनी रहइछ तैयो
गाढ निन्न नहि आबय

ई जुनि पूछू अहां बिना
राति बितैए हमर कोना ....

किछु दर्द एहन सन होइए
लिखितो जे लिखल ने जाइए
कहितो जे कहल ने जाइए
लेकिन जे सहल ने जाइए
मजबूरी तं अछि रहबा ले'
एसगर रहल ने जाइए

ई जुनि पूछू अहां बिना
राति बितैए हमर कोना ....

अछि आंखिक निन्न बिलायल
लगइछ किछु जेना हेरायल
मन बिकल भेल औनायल
नोरे नयना भरि आयल

प्रिये! अहांकेर सुधिक लहरिमे

जाइत छी भसिआयल

ई जुनि पूछू अहां बिना

राति बितैए हमर कोना ....

तोरा अंगनामे

तोरा अंगनामे

वसन्त नेने

आएब सजना । तोरा अंगनामे.......

पीयरे ओहार बिच लाले रंग डोलिया

ताही बिच कुहुकय प्राण कोइलिया

तोरे ले' पराती

सुनैब सजना । तोरा अंगनामे.......

आषक पातिल प्रेमक बाती

देखि जुडायत दगधल छाती

सपने जकां कोहबर

सजैब सजना । तोरा अंगनामे.......

सेज सजायब कल्पित उपवन

करब निछाउर तन–मन–यौवन

नीलगगन सन

बनैब सजना । तोरा अंगनामे.......

नोर बहाकय थाकलि नयना

उछिलय सिनेहक गंगा–यमुना

संगे–संगे जी भरि

नहैब सजना । तोरा अंगनामे.......

अहां जं ने अबितौं

सपनोमे कहियो ने सोचने होयब जे

अहांकेर बिना हम कोना रहि सकै छी

मिलन केर तरंग हृदयमे उठै छल

प्रियतम ! अहांकें कोना कहि सकै छी

हमर घर अन्हारक अन्हारे रहैत

अहां जं ने अबितौं ! अहां जं ने अबितौं !

चंचल चितवन
सनक ई मनोरम
अहांकेर हृदयकेर
उपवन ने रहितय
त अहीं कहू
हे हमर प्राण प्रियतम
मोनक ई कोइली
कहां जा कुहुकितय

ई स्वप्नक वसन्त असारे रहैत
अहां जं ने अबितौं ! अहां जं ने अबितौं !

दू मोनक ई हरियर
जं धरती ने रहितय
तं कारी घटा ई
कहां जा बरसितय
अहांकेर नोरक
जं सागर ने रहितय
तं उमतल नदी दू
कत'जाक'मिलितय

साओनोमे सुखारक सुखारे रहैत
अहां जं ने अबितौं ! अहां जं ने अबितौं !

विरहक जं ई तार
टूटल रहैत
त जिनगीक वीणा
बजबितौं कोना
अधरेमे जं भास
हेरायल रहैत
तं संगीत प्रेमक

सुनितौं कोना

ई श्रृंगारो बेकारक बेकारे रहैत

अहां जं ने अबितौं ! अहां जं ने अबितौं !

आइ ने छोडब

भौजी

आइ ने छोडब,

आइ ने छोडब, भौजी

लेपब गालमे लाल अबीर ।

भैया जं कतबो तमसेता

क’ लेब कान बहीर । भौजी........

फगुआ खेलथि श्रीकृश्णजी

गोपी सबहक संग

मिथिलाकेर अछि फगुआ नामी

दियर–भाउजकेर संग । भौजी........

फगुआमे होइते अछि अहिना

व्यर्थ करै छी लाज

आजुक दिन रहिते अछि सभठां

दियर–भाउज केर राज । भौजी......

नवकी भौजी पाबि अहां सन

हम सब भेलौं नेहाल

बरख दिनके बाद ई अवसर

आओत परुकें साल । भौजी......

भौजी केहनो हो लजबिज्जी

हम सभ आइ ने छोडी

दियर–भाउज केर बीच होइछ

ई पावनि प्रेमक डोरी ।भौजी........

हम मुग्ध भेलौं

हम मुग्ध भेलौं

धरतीक श्रृंगार देखि क'

नव कलष नव मज्जर

आ पात देखि क'

बुझि पडैछ आबि गेल नव दुनियां जेना

आइ धरतीयो लगैछ नव कनियां जेना ।.....

थाकि गेलाह चलिते

वसन्त सन कहार

पीरे महफासं भेलीह

कनियां बहार

आइ भमरो लगैत अछि नचनियां जेना

आइ सगरो बजैछ हरमुनियां जेना ।........

सूतलि कली छलि

से जागि उठली

ई हूलि–मालि देखि क'

नाचि उठली

आइ उमतल चलैत अदि हावा जेना

नेने फूल–पात दूभि–धान–लावा जेना ।.....

आकाष–सन कोबर

निहारि लिय' मित्र

देखू चन्द्रमाक लीखल

तरेगनक चित्र

काल्हि रातियो लगैत छल

काल–राति सन

आइ दिनो लगैत अछि

सोहाग–राति सन

आइ कोइलियो लगैछ अहिबाती जेना

जे झूमि क' गबैत हो पराती जेना ।......

किछु नै भेल

मोटका–मोटका पोथी पढलौं
पोथी केर सभ पन्ना रटलौं
से सभ रटि क' किछु नै भेल,
पहिने जोडी जोड दषमलव
आब जोडै छी नून आ तेल । मोटका–मोटका पोथी........

कनियें बढलौं, बूझ' लगलौं
की थिक भाशण की थिक षासन
आब तं भरि दिन इएह बुझै छी
की थिक बासन की थिक रासन

पहिने हाथ रुमाल रहै छल
आब हाथमे झोरी लेल ।मोटका–मोटका पोथी........

पहिने मोन रहय जीहेपर
कहिया कत'कथीक चुनाव
आब तं भरि दिन मोन रहैए
चाउर–दालि–आंटा केर भाव

पहिने हाथमे कलम रहै छल
आब हाथमे खुरपी लेल । मोटका–मोटका पोथी........

पहिने रहय प्रवल जिज्ञासा
के छथि कोन दलक लीडर
आब करै छी कोषिष चीन्हक
के छथि मुखिया के डीलर

पहिने हमहूं खेली फगुआ
आब मात्र खेली धुरखेल । मोटका–मोटका पोथी........

पहिने पढलौं 'क्या और कहा'

सोना–चानिक कत्त'खान

आब जनै छी कत्त–कत्त'

सरकारी कोटाक दोकान

पहिने खेली खेल ताषकेर

आब खेलै छी कर्मक खेल । मोटका–मोटका पोथी........

पहिने छल डिगरीक सिहन्ता

आब अछि नोकरीकेर चिन्ता

खेतो सभ अछि पडि गेल भरना

बिका गेलनि कनियांकेर गहना

हम छगुन्ता मे पडले छी

हे परमेष्वर ई की भेल ।मोटका–मोटका पोथी........

पहिने विपत्ति पडै त लोकक

मदति करैत छला भगवान

आब कतबो हर–हर बम–बम कहू

देथि ने षिवषंकरजी ध्यान

आइ कृश्ण गोवर्द्धनधारीक

चक्र–सुदर्षन कत्त' गेल ??मोटका–मोटका पोथी........

वर आ कनियां

वर आ कनियां केलनि झगडा
के बुझबौ छै मतलब ककरा ?

•

थीक हमर ई कर्मक दोख
सासु–ससुर सभ भेटल निषोख ।

•

छथि कंजूस अहांकेर बाप
मोन होइए जे दियनि सराप ।

•

नीक जकां हमरा ठकि लेलनि
गछि कए सभटा किछु नै देलनि ।

•

अहींक माए–बाबू की केलनि
नीक एकोटा भार ने संठलनि ।

•

दस हजार टाका गनबौलनि
पाइ एकोटा खर्च ने केलनि ।

•

नहि जुडलनि एको टा गहना

लूझि लेलौं देलो मुंहबजना ।

•

हमरा ले' अहीं की केलौं

जरल कपार जे अइ घर एलौं ।

•

से कहि कनियां लगली कान'

क्रोधें व'रो लगला फान' ।

•

कनियां भरि मोन खेलनि मारि

व'रो जी भरि सुनलनि गारि ।

•

सुनु अय कनियां सुनु यौ वर

एनाक'कतेक दिन चलत ई घर ?

•

से फगुआ खेलायत कोना क'

छै जेबी जकर खाली–खाली

आ खरची घरक लटपटायल

से फगुआ खेलायत कोना क'

जकरा आंगन वसन्त नहि आयल ....

बीस बरखक तपस्या त कैलक तखन
भेटलैक बडकीटा डिगरी
से दर–दरके ठोकर खेलक मुदा
नहि भेटलैक कोनोटा नोकरी

जकर स्वप्नक महल ढहि गेलै
छै आषा–कमल मुरझायल
से डंफा बजाओत कोना क'
जकरा आंगन वसन्त नहि आयल ......

द' आयल कते ठाम औना –पथारी
ने भेटलैक पैंचे ने भेटलै उधारी
ने घरमे छै चुटकी भरि मडुओ–खेसारी
की करतैक भानस से चिन्ता छै भारी
रहि–रहि कनैत छैक गृहिणी बेचारी
कत' छह बैसल हौ कृश्ण–मुरारी ?

जकरा सोझांमे नेना कनै छै
'मां, की खैब भूख अछि लागल ?'
से पूआ पकाओत कोना क'
जकरा आंगन वसन्त नहि आयल .....

नूआ छै गुदरी आ धोती छै फाटल
बौआक अंगापर चिप्पी छै साटल
बांचल छै जकरा घरे–घरारी
से कीनत कोना नव धोती आ साडी

जकरा रहबा ले' एकटा मडैया

आ मडैया सेहो ढनमनायल

से रंग उडायत कोना क'

जकरा आंगन वसन्त नहि आयल ......??

युग कहैत अछि

युग कहैत अछि, हम ने कही

अपना जिनगीक अहीं छी मालिक

चाहे अपने जेना रही ।.......

दू–तीन बाउ

सं घर बसाउ

बेषी ले'मन

नै ललचाउ

अपने हाथ लगाम अहांक अछि

चाहे अपने जेना उडी ।.......

छोट–छीन परिवार

अछि सुख केर आधार

बेषी धीया–पूतासं लागय

घर हो जेना बजार

स्वर्ग–नरक अपनेक हाथ अछि

चाहे अपने जेना रही ।......

देखू ई दुध–कट्टू बच्चा

आंखि धसल छै पेट चभच्चा

आओत ई जहिये दुनियांमे

गारि अहांकें देत ई पक्का

भरि नै सकतै पेट कोनहुना

कत'सं भेटतै दूध–दही ?......

नहि चिन्ताकेर कोनो प्रयोजन

करा लिय' परिवार–नियोजन

जतबे अछि ततबे ले' चाही

समुचित षिक्षा समुचित भोजन

पीडित परिवारक भारें अछि

कांपि रहल भारतक मही ।......

मांगि रहल अछि देष अहांसं

स्वस्थ सुखी सन्तान

तखने होयत परिवारक संग

भरि देषक कल्याण

अछि कर्त्तव्य पुनीत अहां ले'

चाहे अपने जेना करी ।......

फगुआ चलिए गेल

फगुआ आएल

फगुआ गेल

फगुआ चलिए गेल,

फगुआ खेलै ले'

मोन लगले रहि गेल ।......

करेजाके सप्पत द'क'

ओकरा लिखलिऐ

दुइयो दिनके खातिर एत'

अबै ले' कहलिऐ

ओकरापर

मोन टंगले रहि गेल ।......

ढोल बाजल डंफा बाजल

होइ छल गर्द

एम्हर हमरा होइत रहल

मीठ–मीठ दर्द

स'ख–सेहन्ता

जरले रहि गेल ।........

जरल छल कपार तं

हम कोना हंसितौं

ननदि आ दीयर संगे

खेलबे किए करितौं

रंग–अबीर

पडले रहि गेल ।......

मोन मारि रहि गेलौं

पीटैत कपार

पडले रहलौं भरि दिन

बन्द क' केबार

त ॅले' अर्र–दर्र बुढिया

बजिते रहि गेल ।.......

केहेन होइ छै फगुआ

से हम ने बुझलिऐ

भीजि गेलै गेरूआ

हम ततेक कनलिऐ

त ॅले' ननदियो निरासी

खौंझबिते रहि गेल ।.......

आब एतै मनसा त'

बजबो ने करबै

कतेक मनौतै त’

एकेटा बात पुछबै

जे, ’एहन निषोख

ई किए’ बनि गेल’??........

कहने त जाउ

बात कहलौं कते, ने बिगडबै अहां

मुदा जाइते ने सभटा बिसरबै अहां

से कहने त जाउ फेर कहिया एबै ?

कहिया एबै ?

ओहू बेर कतेक हम केलौं नेहोरा

मुदा अहां पत्रोक ने देलौं उतारा

सेहन्ता हमर ने बुझलिऐ अहां

फगुओ सन के पावनि ने एलिऐ अहां

आष केर फूल सभ झहरि गेल छल

अहां बिना मोन त हहरि गेल छल
हम कनलौं कते ने देखलिऐ अहां
गारि पढलौं कते ने सुनलिऐ अहां
से सप्पत हमर खाउ
आ कहने त जाउ फेर कहिया एबै
कहिया एबै ?......
बिना पुरूश के मौगीक जिनगी पहाड
बड डेराओन लगैत अछि रातुक अन्हार
पाबि एसगरमे राति भरि कनैत रहि गेलौं
क'बोखार केर लाथ हम सहैत रहि गेलौं
एना करबै जं फेर हम सहि ने सकब
कहि दै छी साफ–साफ चुप्प रहि ने सकब
आगि देहमे लगाय बुझू जरि जैब हम
ने तं खा लेब माहुर आ मरि जैब हम
अहूं ततबे मनाउ
ने तं कहने त जाउ फेर जल्दी एबै
कि नै एबै ?......
ओना मोनमे त' कखनो क' होइए उमंग
जे थोडबो दिन ले' हमरो ल'चलितौं संग
अहूं हमरो अछैते तं कश्ट कटै छी
व्यर्थ होटलमे पाइ ओते नश्ट करै छी
हम कथू ले' अहांकें ने तंग करब
आर चाही की हमरा जं संगे रहब
से ई अर्जी हमर आर मर्जी अहांक
चलू जल्दी सुनाउ जे की करबै
संग ल' चलबै
कि नै ल'जेबै ?.........

सासु–पुतोहुमे

सासु–पुतोहुमे
भोरे–भोरे झगडा भेलै हे ।

बाजलि सासु उठू यै कनियां
आंगन–घर बहारू
थारी–पीढी धोउ–मांजू
आ चिल्हका अपन सम्हारू
रौदक धाही आयल आंगन
आबहु सीडक टारू
कनियां आंच पजारू हे ।......

अइंठैत–जुइंठैत बाजलि कनियां
ई थिक कोन रेबाज
बुढिया बोरसि सेबनहि रहतै
कनियां करतै काज
हम उठब ई पडले रहती
बडबडाइत भरि काबू
हमहूं पडले रहबै हे ।......
बुढिया बाजलि हमरा सोझां
के कल्ला अलगाओत
मुसरी झा के बेटी
हमरेपर आनि बघाडत
हमरापर जे आंखि गुडारत
तकरा सख ध' डाहब
छाउर लगा जीह घीचब हे ।.....

फांड बान्हि क' बाजलि कनियां
आब ने एको सहबनि
मूंह सम्हारथु नै तं
एकटा कहती दसटा कहबनि
अपना सयंके हमहूं दुलारू
हम कथीके सहबनि?
हमहूं सभ किछु कहबनि हे ।.........

सगर टोल दलमल्लित भ' गेल
पसरल घोल–फचक्का
अढे–घाटे देखि रहल छल
चुगिला–चोर–उचक्का
दरबज्जासं दौडल आयल
बुढबा आर जुअनका
झगडा बढिए गेलै हे ।......

बाप–बेटा निज लोकक खातिर
केलनि हल्ला–गुल्ला
पंच एला पंचैती कएलनि
कात करौलनि चुल्हा
बूढी धेलनि महिसक छोहडि
कनिया धेलनि चरखा
जुअनका मटकी मारै हे ।......

बडा–बडा झंझटि छै

यार, बडा–बडा झंझटि छै नोकरीमे
भाइ रे,बडा मजा भेटल बेकारीमे ।
सुतलौं त सुतले छी
झंझटिसं हटले छी
हाथ लेलौं नोभेल
से बैसलौं त बैसले छी
बजितथि की बाबू लाचारीमे । भाइ रे.......
चाहक दोकान हो
पानक दोकान हो
बस हो, ट्रेन हो
होटल,सिनेमा हो
बीति गेल जीवन उधारीमे । भाइ रे......

मारल ने माछ,आ ने
उपछल हम खत्ता
फेकलनि क्यो छक्का
तं मारि लेलौं सत्ता
गेलौं कहिया` ने खेती–पथारीमे ।
भेटल की नोकरी
भेलहुं परतन्त्र हम
चलै छी भरि दिन
जेना कोनो यन्त्र हम
मोन भ' गेल बन्द आलमारीमे । भाइ रे.....
हमरापर बूझू
उनटि गेल दुनियां
बिगडल साहेब आ
रूसलि छथि कनियां

मोन तंग अछि फाइल आर साडीमे । भाइ रे.....

खटलौं भरि मास

तं भेटल दरमाहा

मोन पडल हुनकर

चिट्ठी लिखलाहा

भ' गेल सभ खरचा बिमारीमे । भाइ रे.....

बूझू त नोकरी

बडका तपस्या अछि

सभकें प्रसन्न करब

बडका समस्या अछि

दिन बीतैए औना–पथारीमे । भाइ रे.....

गुन–धुनमे जखन–तखन

इएह बात सोचै छी

चिन्तामे क्षुब्ध भेल

माथ अपन नोचै छी

भाइ ! कटै छी जिनगी खुमारीमे । भाइ रे....

बाबू रे बाबू

माए केर मुंहमे बाबू रे बाबू

बहिनिक मुंहमे भैया यौ,

बेर–बेर पूछै छथि कनियां
धेलियै कत' रूपैया यौ । माए केर......

भ' अति चिन्तित माए पुछैत अछि
बौआ,बड दुबराएल लगै छ'
सभटा झंझटि हटबे करतै
एते किए घबराएल लगै छ'

हरथुन सभ दुख भोला दानी
हरथुन कृश्ण कन्हैया हौ । माए केर......

घटले रहइन हिनका सभदिन
साबुन, तेल आ चोटी
कखनो जा क' बैग तकै छथि
ताकि अबै छथि जेबी

भ' निरास माछी सन भन–भन
करइछ बिढनी –दैया यौ । माए केर.....

तैखन बुचिया 'मां,मां' बाजल
लोहछल 'मां' दू चाट लगाओल
सासु बेचारी जं किछु बाजलि
सभ बिक्ख ओकरेपर झाडल

हम गुम्म छी सोचि रहल छी
आयल केहेन समैया यौ । माए केर....

भानस छोडि क' भगली कनियां
ठोकि केबाड खाट ध' लेलनि
भ' उदास माए हारि–थाकि क'
भनसा–घर केर बाट पकडलनि

भानस बनल कियो नै खेलक
खा गेल सभ बिलैया यौ । माए केर.....

मोन पडैतछि हिनकर चिट्ठी
लिखलनि जे 'श्री प्राणनाथजी
एना किए हमरा बिसरल छी'
से पढलौं आ इहो देखै छी

पति–पत्नी केर बीच आबि क'
सौतिन बनल रूपैया यौ । माए केर.....

भारी संकटमे पडि गेलौं
एक दिस घर आ एक दिस कनियां
तीत–मीठ अनुभव करइत छी
माए केर ममता, बहु केर दुनियां
सोचि रहल छी एना कते दिन
चलतै जीवन–नैया यौ । माए केर....

तोरा की पता जे...

तोरा बिना कोना हम रहै छी
मोन केर बात ई मोने रखै छी
तोरा की पता जे
कोना हम जिबै छी ।

अपन मोनक हरियर कागतपर
लीखल तोरहि नाम
एको पल विश्राम करै छी
जा क' ओही ठाम

मात्र ओही ठाम कने छाहरि देखै छी
ओही ठां जाक' हंसै छी–गबै छी
तोरा की पता जे
कोना हम जिबै छी ।

मोन पडैतछि ओ दिन प्रियतम
तोरा संग जे बीतल
मोने अछि बिछुडनक घडी
आ आंखिक पिपनी तीतल

नोरेटा पीबि क' हमहूं रहै छी
नोरेमे डूबल ई जिनगी देखै छी
तोरा की पता जे
कोना हम जिबै छी ।......

तोरे स्नेह–षिखापर अर्पित
कएने छी हम अपनाकें
मन–मन्दिरमे पूजि रहल छी
तोरे प्रेमक प्रतिमाकें

प्रतीक्षाक उपवनसं कुसुमो अनै छी
मोनकेर वेदनासं प्रतिमा पुजै छी
तोरा की पता जे
कोना हम जिबै छी ।........

ताकि रहल छी तोरा सदिखन
बिसरल गीतक पांतीमे
टूटल निन्नक सपनामे
आ जरल प्रेमकेर बातीमे

घूरि क’ अतीतसं हम चल अबै छी
स्मृतिक दर्दमे तोरा पबै छी
तोरा की पता जे
कोना हम जिबै छी ।.......

कथमपि टूटि सकैछ ने कहियो
निर्मल प्रेमक डोरी
जै डोरीमे युग–युगसं अछि
बान्हल चान–चकोरी

हृदयक गगनके तोरे चन्ना बुझै छी
अपनाकें तें हम चकोर कहै छी
तोरा की पता जे
कोना हम जिबै छी ।........

कतेक जतनसं लीखि सकल छी
तोरा दूटा आखर
उत्तर दीहें जुनि बनबिहें

अपन हृदयकें पाथर

ई जुनि लिखिहें जे हमहूं कनै छी
लिखिहें जे सदिखन हंसिते रहै छी
तोरे खुषीक कामना हम करै छी
तोरा की पता जे
कोना हम जिबै छी ।.......

हम देष केर सिपाही

हम देष केर सिपाही

हम एक बात जानी
अइ देषकेर पूत हम
थिक नाम हिन्दुस्तानी । हम...

मरिए क’ भेटय अमृत तं
पीबिए क’ की करब
गुलाम भइए जैब तं
जीबिए क’ की करब

लुटा नै सकै छी
सुभाशक निषानी । हम.....

हमरा ले’ ऐ धरतीक आगां
स्वर्गो एकदम तुच्छ अछि
हमरा ले’आजादीक आगां
जिनगी एकदम छुच्छ अछि

बिसरि नै सकै छी
बियालिस केर पिहानी । हम.....

अछि स्वतंत्रता हमर
सपनाक ओ सरोवर
जाहिमे हो देषक
कते रत्न केर धरोहर

से गमा नै सकै छी
राखि क’ हम जुआनी । हम.....

खूनक एकोटा कतरा

जाधरि षरीरमे रहत

फहराइत तिरंगाकें

कियो झुका नै सकत

सहि नै सकै छी

हम ककरो षैतानी । हम......

आंखि देखयबाक उत्तर

टाकु भोंकि क’ देबै

डेग बढयबाक उत्तर

घेंट छोपि क’ देबै

चिकरि क’ कहै छी

चाहे मानी ने मानी । हम.....

गौरी कोना क’ रहती

छोटे–मोटे टूटल मडैयामे गौरी कोनाक’ रहती हे ?

गौरी हमर

छथि बड सहलोला

कोनाक’

पिसती भांगक गोला

हाथोमे पडतनि लोढीक ठेला, कोनाक’ सहती हे ?

षिवजीकें धुर दुइ

भांगेक बाडी

बीतो करथि नहि

खेती–पथारी

धीया–पूता केर पेटक बखारी,कोनाक’ भरती हे ?

अपने महादेव

भेला मसानी

बसहाकें के देत

गूडा आ सानी

भूत–परेतक डरें भवानी,दूरे पडेती हे ।...

कहथि ‘अनिल’

सुनु–सुनु हे मनाइनि

धीया अहांकेर

छथि जगतारनि

जनिक संगमे त्रिभुवनदानी, तनिका कथीक दुख हे ?

छोटे–मोटे टूटल मडैयोमे गौरी सभ सुख पओती हे ।......